

श्री विश्वकर्मा पुराण

॥श्री विश्वकर्मा पुराण॥

श्री विश्वकर्मा भगवान

हम अपने प्राचीन ग्रंथो उपनिषद एवं पुराण आदि का अवलोकन करें तो पायेंगे कि आदि काल से ही विश्वकर्मा शिल्पी अपने विशिष्ट ज्ञान एवं विज्ञान के कारण ही न मात्र मानवों अपितु देवगणों द्वारा भी पूजित और वंदित है । भगवान विश्वकर्मा के आविष्कार एवं निर्माण कोयों के सन्दर्भ में इन्द्रपुरी, यमपुरी, वरुणपुरी, कुबेरपुरी, पाण्डवपुरी, सुदामापुरी, शिवमण्डलपुरी आदि का

निर्माण इनके द्वारा किया गया है । पुष्पक विमान का निर्माण तथा सभी देवों के भवन और उनके दैनिक उपयोगी होनेवाले वस्तुएं भी इनके द्वारा ही बनाया गया है । कर्ण का कुण्डल, विष्णु भगवान का सुदर्शन चक्र, शंकर भगवान का त्रिशूल और यमराज का कालदण्ड इत्यादि वस्तुओं का निर्माण भगवान विश्वकर्मा ने ही किया है ।

भगवान विश्वकर्मा ने ब्रम्हाजी की उत्पत्ति करके उन्हें प्राणीमात्र का सृजन करने का वरदान दिया और उनके द्वारा 84 लाख योनियों को उत्पन्न किया । श्री विष्णु भगवान की उत्पत्ति कर उन्हें जगत में उत्पन्न सभी प्राणियों की रक्षा और भगण-पोषण का कार्य सौंप दिया । प्रजा का ठीक सुचारु रूप से पालन और हुकुमत करने के लिये एक अत्यंत शक्तिशाली त्रिगामी सुदर्शन चक्र प्रदान किया । बाद में संसार के प्रलय के लिये एक

अत्यंत दयालु बाबा भोलेनाथ श्री शंकर भगवान की उत्पत्ति की । उन्हे डमरु, कमण्डल, त्रिशुल आदि प्रदान कर उनके ललाट पर प्रलयकारी तिसरा नेत्र भी प्रदान कर उन्हे प्रलय की शक्ति देकर शक्तिशाली बनाया । यथानुसार इनके साथ इनकी देवियां खजाने की अधिपति माँ लक्ष्मी, राग-रागिनी वाली वीणावादिनी माँ सरस्वती और माँ गौरी को देकर देवों को सुशोभित किया ।

उपरोक्त वर्णन के अनुसार ब्रह्मा विष्णु महेश तीनों के पिता विश्वकर्मा ही है उपयुक्त प्रणाम से यह सिद्ध नहीं हो पा रहा है कि विश्वकर्मा के पिता कौन है इनकी उत्पत्ति कैसे हुई जिसकी जानकारी किसी भी लेख में उपलब्ध नहीं है हमने पूरा लेख पढ़ा

हमारे धर्मशास्त्रों और ग्रंथों में विश्वकर्मा के पाँच स्वरूपों और अवतारों का वर्णन प्राप्त होता है ।

विराट विश्वकर्मा - सृष्टि के रचेता
धर्मवंशी विश्वकर्मा - महान शिल्प
विज्ञान विधाता प्रभात पुत्र
अंगिरावंशी विश्वकर्मा - आदि विज्ञान
विधाता वसु पुत्र
सुधन्वा विश्वकर्मा - महान शिल्पाचार्य
विज्ञान जन्मदाता ऋषि अथर्वी के पात्र
भृंगुवंशी विश्वकर्मा - उत्कृष्ट शिल्प
विज्ञानाचार्य (शुक्राचार्य के पौत्र)

देवगुरु बृहस्पति की भगिनी भुवना के पुत्र भौवन
विश्वकर्मा की वंश परम्परा अत्यंत वृद्ध है। सृष्टि के वृद्धि
करने हेतु भगवान पंचमुख विश्वकर्मा के सघोजात

नामवाले पूर्व मुख से सामना दूसरे वामदेव नामक दक्षिण मुख से सनातन, अघोर नामक पश्चिम मुख से अहिंमून, चौथे तत्पुरुष नामवाले उत्तर मुख से प्रत्न और पाँचवे ईशान नामक मध्य भागवाले मुख से सुपर्णा की उत्पत्ति शास्त्रो में वर्णित है। इन्ही सानग, सनातन, अहमन, प्रत्न और सुपर्ण नामक पाँच गोत्र प्रवर्तक ऋषियों से प्रत्येक के पच्चीस-पच्चीस सन्ताने उत्पन्न हुई जिससे विशाल विश्वकर्मा समाज का विस्तार हुआ है ।

शिल्पशास्त्रो के प्रणेता बने स्वयं भगवान विश्वकर्मा जो ऋषशि रूप में उपरोक्त सभी ज्ञानों का भण्डार है, शिल्पो के आचार्य शिल्पी प्रजापति ने पदार्थ के आधार पर शिल्प विज्ञान को पाँच प्रमुख धाराओं में विभाजित करते हुए तथा मानव समाज को इनके ज्ञान से लाभान्वित करने के निर्मित पाणच प्रमुख शिल्पाचार्य पुत्र को उत्पन्न किया जो अयस ,काष्ठ, ताम्र, शिला एवं हिरण्य शिल्प के

अधिषष्ठाता मनु, मय, त्वष्ठा, शिल्पी एवं दैवज्ञा के रूप में जाने गये । ये सभी ऋषि वेंदो में पारंगत थे ।

कन्दपुराण के नागर खण्ड में भगवान विश्वकर्मा के वंशजों की चर्चा की गई है । ब्रम्ह स्वरूप विराट श्री.विश्वकर्मा पंचमुख है । उनके पाँच मुख हैं जो पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और ऋषियों को मंत्रों द्वारा उत्पन्न किये हैं । उनके नाम हैं – मनु, मय, त्वष्ठा, शिल्पी और देवज्ञ ।

ऋषि मनु विश्वकर्मा - ये "सानग गोत्र" के कहे जाते हैं । ये लोहे के कर्म के उद्दगाता हैं । इनके वंशज लोहकार के रूप में जाने जाते हैं ।

सनातन ऋषि मय - ये सनातन गोत्र के कहे जाते हैं । ये बढई के कर्म के

उद्धगाता है। इनके वंशज काष्ठकार के रूप में जाने जाते हैं।

अहभून ऋषि त्वष्ठा - इनका दूसरा नाम त्वष्ठा है जिनका गोत्र अहंभन है । इनके वंशज ताम्रक के रूप में जाने जाते हैं ।

प्रयत्न ऋषि शिल्पी - इनका दूसरा नाम शिल्पी है जिनका गोत्र प्रयत्न है । इनके वंशज शिल्पकला के अधिष्ठाता हैं और इनके वंशज संगतराश भी कहलाते हैं इन्हें मुर्तिकार भी कहते हैं ।

देवज्ञ ऋषि - इनका गोत्र है सुर्पण । इनके वंशज स्वर्णकार के रूप में जाने जाते हैं । ये रजत, स्वर्ण धातु के शिल्पकर्म करते हैं, ।

परमेश्वर विश्वकर्मा के ये पाँच पुत्र, मनु, मय, त्वष्ठा, शिल्पी और देवज्ञ शस्त्रादिक निर्माण करके संसार करते हैं । लोकहित के लिये अनेकानेक पदार्थ को उत्पन्न करते वाले तथा घर ,मंदिर एवं भवन, मुर्तिया आदि को बनाने वाले तथा अलंकारों की रचना करने वाले हैं । इनकी सारी रचनाये लोकहितकारणी हैं । इसलिए ये पाँचो एवं वन्दनीय ब्राम्हण हैं और यज्ञ कर्म करने वाले हैं । इनके बिना कोई भी यज्ञ नहीं हो सकता ।

मनु ऋषि ये भगवान विश्वकर्मा के सबसे बड़े पुत्र थे । इनका विवाह अंगिरा ऋषि की कन्या कंचना के साथ हुआ था इन्होंने मानव सृष्टि का निर्माण किया है । इनके कुल में अग्निगर्भ, सर्वतोमुख, ब्रम्ह आदि ऋषि उत्पन्न हुये हैं ।

भगवान विश्वकर्मा के दुसरे पुत्र मय महर्षि थे । इनका विवाह परासर ऋषि की कन्या सौम्या देवी के साथ हुआ था । इन्होंने इन्द्रजाल सृष्टि की रचना किया है । इनके कुल में विष्णुवर्धन, सूर्यतन्त्री, तंखपान, ओज, महोज इत्यादि महर्षि पैदा हुए है ।

भगवान विश्वकर्मा के तिसरे पुत्र महर्षि त्वष्ठा थे । इनका विवाह कौषिक ऋषि की कन्या जयन्ती के साथ हुआ था । इनके कुल में लोक त्वष्ठा, तन्तु, वर्धन, हिरण्यगर्भ शुल्पी अमलायन ऋषि उत्पन्न हुये है । वे देवताओं में पूजित ऋषि थे ।

भगवान विश्वकर्मा के चौथे महर्षि शिल्पी पुत्र थे । इनका विवाह भृगु ऋषि की करूणाके साथ हुआ था । इनके कुल में बृद्धि, धुन, हरितावश्व, मेधवाह नल, वस्तोष्यति,

शवमुन्यु आदि ऋषि हुये है । इनकी कलाओं का वर्णन मानव जाति क्या देवगण भी नहीं कर पाये है ।

भगवान विश्वकर्मा के पाँचवे पुत्र महर्षि दैवज्ञ थे । इनका विवाह जैमिनी ऋषि की कन्या चन्द्रिका के साथ हुआ था । इनके कुल में सहस्रातु, हिरण्यम, सूर्यगोविन्द, लोकबान्धव, अर्कषली इत्यादी ऋषि हुये ।

इन पाँच पुत्रों के अपनी छिनी, हथौड़ी और अपनी उँगलीयों से निर्मित कलाये दर्शकों को चकित कर देती है । उन्होन् अपने वंशजों को कार्य सौंप कर अपनी कलाओं को सारे संसार में फैलाया और आदि युग से आज तक अपने-अपने कार्य को सभालते चले आ रहे है ।

विश्वकर्मा वैदिक देवता के रूप में मान्य हैं, किंतु उनका पौराणिक स्वरूप अलग प्रतीत होता है। आरंभिक काल

से ही विश्वकर्मा के प्रति सम्मान का भाव रहा है। उनको गृहस्थ जैसी संस्था के लिए आवश्यक सुविधाओं का निर्माता और प्रवर्तक कहा माना गया है। वह सृष्टि के प्रथम सूत्रधार कहे गए हैं-

देवौ सौ सूत्रधारः जगदखिल हितः ध्यायते सर्वसत्त्वै।

वास्तु के 18 उपदेष्टाओं में विश्वकर्मा को प्रमुख माना गया है। उत्तर ही नहीं, दक्षिण भारत में भी, जहां मय के ग्रंथों की स्वीकृति रही है, विश्वकर्मा के मतों को सहज रूप में लोकमान्यता प्राप्त है। वराहमिहिर ने भी कई स्थानों पर विश्वकर्मा के मतों को उद्धृत किया है।

विष्णुपुराण के पहले अंश में विश्वकर्मा को देवताओं का वर्धकी या देव-बढ़ई कहा गया है तथा शिल्पावतार के रूप में सम्मान योग्य बताया गया है। यही मान्यता अनेक पुराणों में आई है, जबकि शिल्प के ग्रंथों में वह सृष्टिकर्ता

भी कहे गए हैं। स्कंदपुराण में उन्हें देवायतनों का सृष्टा कहा गया है। कहा जाता है कि वह शिल्प के इतने ज्ञाता थे कि जल पर चल सकने योग्य खड़ाऊ तैयार करने में समर्थ थे।

सूर्य की मानव जीवन संहारक रश्मियों का संहार भी विश्वकर्मा ने ही किया। राजवल्लभ वास्तुशास्त्र में उनका ज़िक्र मिलता है। यह ज़िक्र अन्य ग्रंथों में भी मिलता है। विश्वकर्मा कंबासूत्र, जलपात्र, पुस्तक और ज्ञानसूत्र धारक हैं, हंस पर आरूढ़, सर्वदृष्टिधारक, शुभ मुकुट और वृद्धकाय हैं—

कंबासूत्राम्बुपात्रं वहति करतले पुस्तकं ज्ञानसूत्रम्।

हंसारूढ़स्विनेत्रं शुभमुकुट शिरः सर्वतो वृद्धकायः॥

उनका अष्टगंधादि से पूजन लाभदायक है।

विश्व के सबसे पहले तकनीकी ग्रंथ विश्वकर्मीय ग्रंथ ही माने गए हैं। विश्वकर्मीयम ग्रंथ इनमें बहुत प्राचीन माना गया है, जिसमें न केवल वास्तुविद्या, बल्कि रथादि वाहन व रत्नों पर विमर्श है। विश्वकर्माप्रकाश, जिसे वास्तुतंत्र भी कहा गया है, विश्वकर्मा के मतों का जीवंत ग्रंथ है। इसमें मानव और देववास्तु विद्या को गणित के कई सूत्रों के साथ बताया गया है, ये सब प्रामाणिक और प्रासंगिक हैं। मेवाड़ में लिखे गए अपराजितपृच्छा में अपराजित के प्रश्नों पर विश्वकर्मा द्वारा दिए उत्तर लगभग साढ़े सात हजार श्लोकों में दिए गए हैं। संयोग से यह ग्रंथ 239 सूत्रों तक ही मिल पाया है। इस ग्रंथ से यह भी पता चलता है कि विश्वकर्मा ने अपने तीन अन्य पुत्रों जय, विजय और सिद्धार्थ को भी ज्ञान दिया।

श्री विश्वकर्मा वंशावली

जैसे राम् कृष्णा आदि ईश्वर के अनेक अवतार पुराणों में वर्णन किये गये है, वैसे ही विश्वकर्मा भगवान के अवतारों का वर्णन मिलता है। स्कन्द पुराण के काशी खंड में महादेव जी ने पार्वती जी से कहा है कि हे पार्वती मैं आप से पाप नाशक कथा कहता हूं। इसी कथा में महादेव जी ने पार्वती जी को विश्वकर्मेश्वर लिंगं प्रकट होने की कथा कहते हुए त्वष्टा प्रजापति के पुत्र के संबंध में कहा:

प्रथम अवतार

विश्वकर्माऽभवत्पूर्वं ब्रह्मण स्त्वपराऽतनुः । त्वष्ट्रः
प्रजापतेः पुत्रो निपुणः सर्व कर्मस ॥

अर्थ: प्रत्यक्ष आदि ब्रह्मा विश्वकर्मा त्वष्टा प्रजापति का पुत्र पहले उत्पन्न हुआ और वह सब कामों में निपुण था।

दूसरा अवतार

स्कन्द पुराण प्रभास खंड सोमनाथ माहात्म्य सोम पुत्र
संवाद में विश्वकर्मा के दूसरे अवतार का वर्णन इस भाति
मिलता है। ईश्वर उचावः

शिल्पोत्पत्तिं प्रवक्ष्यामि शृणु षण्मुख यत्नतः ।

विश्वकर्माऽभवत्पूर्वं शिल्पिनां शिव कर्मणाम् ॥ मदंगेषु
च सभूताः पुत्रा पंच जटाधराः । हस्त कौशल संपूर्णाः पंच
ब्रह्मरताः सदा ॥

एक समय कैलाश पर्वत पर शिवजी, पार्वती, गणपति
आदि सब बैठे थे उस समय स्कन्दजी ने गणपतिजी के
रत्नजडित दातों और पार्वती जी के जवाहरात से जडें
हुए जेवरों को देखकर प्रश्न किया कि, हे पार्वतीनाथ,
आप यह बताने की कृपा करे कि ये हीरे जवाहरात
चमकिले पदार्थों किसने निर्मित किये? इसके उत्तर में
भोलानाथ शंकर ने कहा कि शिल्पियों के अधिपति श्री

विश्वकर्मा की उत्पत्ति सुनो। शिल्प के प्रवर्तक विश्वकर्मा पांच मुखों से पांच जटाधरी पुत्र उत्पन्न हुए जिन के नाम मनु, मय, शिल्प, त्वष्टा, दैवेज थे। यह पांचों पुत्र ब्रह्मा की उपासना में सदा लगें रहते थे इत्यादि।

तीसरा अवतार

आर्दव वसु प्रभास नामक को अंगिरा की पुत्री बृहस्पति जी की बहिन योगसिद्ध विवाही गई और अष्टम वसु प्रभाव से जो पुत्र उत्पन्न हुआ उसका नाम विश्वकर्मा हुआ जो शिल्प प्रजापति कहलाया इसका वर्णन वायुपुराण अ.22 उत्तर भाग में दिया है:

बृहस्पतेस्तु भगिनो वरस्त्री ब्रह्मचारिणी । योगसिद्धा
जगत्कृत्स्नमसक्ता चरते सदा ॥ प्रभासस्य तु सा भार्या
वसु नामष्ट मस्य तु । विश्वकर्मा सुत स्तस्यां जातः शिल्प
प्रजापतिः ॥

मत्स्य पुराण अ.5 में भी लिखा है:

विश्वकर्मा प्रभासस्य पुत्रः शिल्प प्रजापतिः । प्रसाद
भवनोद्यान प्रतिमा भूषणादिषु । तडागा राम कूपेषु स्मृतः
सोमऽवर्धकी ॥

अर्थ: प्रभास का पुत्र शिल्प प्रजापति विश्वकर्मा देव,
मन्दिर, भवन, देवमूर्ति, जेवर, तालाब, बावडी और कुएं
निर्माण करने देव आचार्य थे।

आदित्य पुराण में भी कहा है कि:

विश्वकर्मा प्रभासस्य धर्मस्थः पातु स ततः ॥

महाभारत आदि पर्व विष्णु पुराण औरं भागवत में भी
इसका उल्लेख किया गया है।

विश्वकर्मा ऋषि

विश्वकर्मा नाम के ऋषि भी हुए है। विद्वानों को इसका पूरा पता है कि ऋग्वेद में विश्वकर्मा सूक्त दिया हुआ है, और इस सूक्त में 14 ऋचायें है इस सूक्त का देवता विश्वकर्मा है और मंत्र दृष्टा ऋषि विश्वकर्मा है। विश्वकर्मा सूक्त 14 उल्लेख इसी ग्रन्थ विश्वकर्मा-विजय प्रकाश में दिया है। 14 सूक्त मंत्र और अर्थ भावार्थ सब लिखे दिये है। पाठक इसी पुस्तक में देखे लेंगे। यइमा विश्वा भुवनानि इत्यादि से सूक्त प्रारम्भ होता है यजुर्वेद 4/3/4/3 विश्वकर्मा ते ऋषि इस प्रमाण से विश्वकर्मा को होना सिद्ध है इत्यादि। पाठकगण। वेदों और पुराणों के अनेक प्रमाणों से हम विश्वकर्मा को परमात्मा परमपिता जगतपित्ता, सृष्टि कर चुके तथा विश्वकर्मा के अवतारों को भी पुराणों से बता चुके है। अब भी कोई हटधर्मी करें

तो हमारे पास उनका इलाज करने का तरीका भी है। इन टकापन्थी भोजन भट्टों ने बहुत धूर्तता की है। विश्वकर्मा देव की अवेहलना करने से ही इस समय ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि कष्टमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। न इनके पास खुद की उत्पत्ति है यह टकशाली ब्राह्मण यह देख पद्म पुराण के वचनों पर तनिक ध्यान नहीं देते, देखों कितना साफ कहा है। अर्थ विष्णु और विश्वकर्मा में कोई भेद नहीं।

विश्वकर्मा अनेक नामों से विभूषित

जगतकर्ता विश्वकर्मा भौवन विश्वकर्मा, ऋषि विश्वकर्मा धर्म ग्रंथों में अनेक अवतरण आये हैं। विषय अनेकानेक नामों में बता हुआ है विश्वकर्मा ब्राह्मण कर्म है, अर्थात् विश्वकर्मा सन्तान कहने का दावा करने वाले तथा अपने को पांचाल शिल्पी ब्राह्मण बताने वाले खरे ब्राह्मण हैं।

यहां हम धर्मग्रन्थों के प्रमामों को देकर अन्त में ग्रथों के आधार पर भृगु, अंगिरा, मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी और दैवेज्ञ आदि की वंशावली भी सप्रमाण दिखायेंगे।

प्राचीन धर्म शास्त्रों में

शिल्पज्ञ, विश्वकर्मा ब्राह्मणों को रथकार वर्धकी, एतब कवि, मोयावी, पाँचाल, रथपति, सुहस्त सौर और परासर आदि शब्दों में सम्बोधित किया गया था। उस समय आजकल के सामान लोहाकारों, काष्ठकारों और स्वर्णकारों आदि सभी के अलग-अलग सहस्रों जाति भेद नहीं थे। प्राचीन समय में शिल्प कर्म बहुत उंचा समझा जाता था, क्योंकि धर्मग्रन्थों की खोज में हमें पता चलता है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तीनों ही वर्ण रथ कर्म अर्थात् शिल्प कर्म करते थे। हम यहां विश्वकर्मा ब्राह्मणों के ब्राह्मणत्व विषयक कुछ प्रमाण देने से पूर्व यह उचित

समझते हैं कि रथकार, पाचांल, नाराशस इत्यादि शब्दों के विषय में कुछ थोड़ा समझा दें। जिससे आगे को जो धर्म शास्त्रों के प्रमाण हम दिखायेंगे उनमें जब इन शब्दों में से कोई आवे तो हमारे पाठकों को समझने में कठिनाई न पड़े।

रथकार

यह शब्द प्राचीन धर्मग्रन्थों में अनेक स्थलों पर आया है, और उनके शिल्पी ब्राह्मण के स्थान में प्रयोग हुआ है। अर्थात् लोककार, काष्ठकार, स्वर्णकार, सिलावट और ताम्रकार सब ही काम करने वाले कुशल प्रवीण शिल्पी ब्राह्मण का बोध केवल रथकार शब्द से ही कराया गया है, और यही शब्दों वेदों तथा पुराणों में भी शिल्पज्ञ

ब्राह्मणों के लिए लिखा गया है। स्कन्द पुराण नागर खण्ड अध्याय 6 में रथकार शब्द का प्रयोग हुआ है:

सद्योजाता दि पंचभ्यो मुखेभ्यः पंच निर्भये ॥ विश्वकर्मा
सुता होते रथ कारास्तु पचं च ॥ तास्मिन् काले महाभागो
परमो मय रूप भाक् ॥ पाषणदार कंटकं सौ वर्ण दशकं
तदा ॥ काष्ठं च नव लोहानि रथ कृद्यो ददौ विभुः ॥ रथ
कारास्तदा चक्रुः पचं कृत्यानि सर्वदा ॥ षडदशनाद्य
नुष्ठानं षट् कर्मनिरताश्च ये ॥

अर्थ: शंकर बोले कि हे स्कन्द, सद्योजात् वामदेव,
तत्पुरूष, अधीर और ईशान यह पांच ब्रह्म सजंक
विश्वकर्मा के पांच मुखों से पैदा हुए। इन विश्वकर्मा पुत्रों
की रथकार सजां है। अनेक रूप धारण करने वाले उस
विश्वकर्मा ने अपने पुत्रों को टांकी आदि दस शिल्प
आयुध अर्थात् दस औजार सोना आदि नौ धातु लोहा,

लकड़ीं आत्यादि दिया। उसके यह षटेकर्म करने वाले रथकार सृष्टि कार्य के पंचनिध पवित्र कर्म करने लगे।

रथकार शब्द क ब्राह्मण सूचक होने के विषय में व्याकरण में भी अष्टाध्यायी पाणिनि सूत्र पाठ सूत्र - शिल्पिनि चा कुत्रः 6/2/76 सज्ञायांच 6/2/77 सिद्धांत कौमुदी वृत्तिः- शिल्पि वाचिनि समासे अष्णते । परे पूर्व माद्युदात्तं, स चेदण कृत्रः परो न भवति । तंतुवायः शिल्पिनि किम- काडंलाव, अकृत्रः किं-कुम्भकारः । सज्ञा यांच अणयते परे तंतुवायो नाम कृमिः । अकृत्रः इत्येव रथकारों नाम ब्राह्मणः पाणिनिसूत्र 4/1-151 कृर्वादिभ्योण्यः ।

ब्राह्मण जाति सूचक अर्थ को बताने वाले जो गोत्र शब्द गण सूत्र में दिये हैं, वह यह हैः कुरू, गर्ग, मगुंष, अजमार, रथकार, बाबदूक, कवि, मति, काधिजल इत्यादि,

कौरव्यां, ब्राह्मणा, मार्ग्य, मांगुयाः आजमार्याः रथकार्याः
वावद्क्याः कात्या मात्याः कापिजल्याः ब्राह्मणाः इति
सर्वत्र।

तात्पर्य यह है कि व्याकरण शास्त्र में भी रथकार शब्द को
आर्य गोत्र, ब्राह्मण जाति बोधक सिद्ध किया हुआ है और
उसका उदाहरण भी रथकारों नाम ब्राह्मण दिया है।

जिससे सिद्ध किया गया है कि रथकार शब्द ब्राह्मण
जाति बोधक है क्योंकि- रथं करोति इति रथकारः।

अर्थात् रथ निर्माण करने वाले ब्राह्मण का बोध प्राचीन
ग्रंथों में रथकार शब्द से होता है। यहां यह भी लिख देना
जरूरी जान पड़ता है कि स्मृतियों में रथकार एक
संकीर्ण जाति को भी लिखा है, परन्तु जहां पवित्र देव
शिल्प आदि का वर्णन आता है। वहां शिल्पी ब्राह्मण
संतति रथकार का ही मतलब होता है। आपको रथकार
विषय में शास्त्र के मन्त्र और रथकार का प्राचीन समय में

जो मान, समान्न प्रतिष्ठा थी उस समय विश्वकर्मा का रथकार रूप विस्तृत था। राजे महाराजा सभी विश्वकर्मा रथकारों को आदर देते थे क्योंकि कलाकार राष्ट्र के निर्माण करने में अग्रसर रखते थे यह ब्राह्मण वर्ग रथकारों में था।

पांचाल

रथकार शब्द के विषय के नमूने के तौर पर ऊपर उदाहरण देकर बता चुके हैं। अब इसी भाँति एक दो उदाहरण पांचाल शब्द के विषय में भी देकर बतावेंगे कि विश्वकर्मा ब्राह्मणों को प्राचीन धर्म ग्रन्थों में पांचाल भी कहा गया है। बराह पुराण में कहा है:

पांचाल ब्राह्मणेति हासः कथं ।। तत्र सुवर्णालंकार
वाणिज्यों प जीविनः पांचाल ब्राह्मणा ।।

शैवागम में कहा है:

पंचालाना च सर्वेषामा चारोऽप्यथ गीयते । षट् कर्म
विनिर्मित्यनी पंचालाना स्मृतानिच ॥

रूद्रयामल वास्तु तन्त्र में शिवाजी महाराज ने कहा कि:

शिवा मनुमंय स्त्वष्टा तक्षा शिल्पी च पंचमः ॥

विश्वकर्मसुता नेतान् विद्धि प्रवर्तकान् ॥ एतेषां पुत्र
पौत्राणामप्येते शिल्पिनो भूवि ॥ पंचालानां च सर्वेषां
शाखास्याच्छौन कायनो ॥ पंचालास्ते सदा पूज्याः

प्रतिमा विश्वकर्मणः ॥ रूद्रवामल वास्तु तन्त्र व्रत्यादि ॥

उपरोक्त प्रमाणों में पांचाल शब्द का प्रयोग विश्वकर्मके
स्थान में किया गया है। अर्थात् रथकार और पांचाल दोनों
शब्द विश्वकर्मा ब्राह्मण बोधक ही है।

स्थापत्य

यज्ञ कर्म और देव कर्म संबंधी कर्म में कहीं कहीं विश्वकर्मा पाचांल ब्राह्मण की सज्ञां स्थापत्य भी कही गई है। जैसे भागवत स्कन्द 3 में स्थापत्य विश्वकर्म शास्त्र लिखा है, इसका यही अर्थ है कि यज्ञ सम्बन्धी और देव संबन्धी पवित्र शिल्प कर्म करने वाले विश्वकर्मा सन्तान ब्राह्मण है। इसकी पुष्टि अमर कोष के प्रमाण से भी होती है।

देखो - अमर कोष अ. ब्रह्मवर्ग - सर्गींष्प तोष्टय्या स्थपतिः

अर्थ: बृहस्पति सज्ञंक इष्ट अर्थात् बृहस्पति सज्ञां वाले यह कर्म करने वाले बृहस्पति गुरू को कहते हैं और दूसरे बृहस्पति विश्व-कर्म कुलोत्पन्न शिल्पाचार्य हुए हैं।

नाराशंस

अंगिरा महर्षि को ऋग्वेद में नाराशंस कहा है इसका प्रमाण ऋग्वेद अ. 8/2/1 में देखो - नराः अगिरसः महर्षयः मनुष्य जाता वुत्पन्नत्वात् ते शंस्यते इति नाराशंसः।

बौधायन श्रौत सूत्र के महा प्रवराध्याय में भी लिखा है - वशिष्ठ शुनिकात्रि भृगु कण्व बाघश्चाधूल राजन्य वैश्य इति नाराशंसः ॥

गोत्र प्रवर दर्पण में भी यह शब्द पाया जाता है - भृगु गणे त्वष्टयाः अग्ने नाराशंसान् व्याख्या स्यामः। वशिष्ठ शुनिकात्रिभृगु काण्व बाघश्चाधूल इति ॥

नाराशंस शब्द पितर सज्ञां में भी प्रयुक्त हुआ है। देखो ऋग्वेद अध्याय 8/1/16/3 - मनोन्वा हुवामुहे नाराशंसेन सोमेने ॥

भाष्य - नरेः शस्यते इति नाराशंसः पितरः ॥

आश्वलायन श्रौत सूत्र में भी नाराशंस का प्रयोग मिलता है। देखो सूत्र 5/6/30 - आप्यायिताश्चिमतान् सादयन्ति ते नाराशंस भवति ॥

उपरोक्त अनेक प्रमाण हमने रथकार पांचाल, रथापत्य और नाराशंस शब्दों के प्रयोग को जिखाकर यह सिद्ध किया हा कि यह सब जहां कही भी धर्म ग्रन्थों में भी लिखे गये है। वहा वह शिल्पी ब्राह्मणों के बोधक है। अब आगे हम यह सिद्ध करके दिखोयेगें कि विश्वकर्मा वंश के ब्राह्मण होने के और भी अनेक प्रमाण सनातनी धर्म ग्रन्थों मे खोजने से मिले सकते है। उपरोक्त रथकार, पांचाल, रथकार, नाराशंस यह सब स्तंभ प्रमाण संग्रह अर्थात विश्वकर्म - ब्राह्मण - भास्कर से संग्रहीत किए है। यह पुस्कत स्वः जयकृष्ण मणिठिया, शर्मा, गुरूदेव की

संग्रहीत है जिसे विश्वकर्मा-विजय-प्रकाश में कई स्तम्भ संग्रहीत कर प्रकाशित किये है।

भृगु ऋषि कुल

वायु पुराण अध्याय 4 के पढने से यह बात सिद्ध हो जाती है कि वास्तव में विश्वकर्मा सन्तान भृगु ऋषि कुल उत्पन्न है देखों लिखा है:

भार्ये भृगोर प्रतिमे उत्तमेऽभिजाते शुभे ॥ हिरण्य
कशिपोः कन्या दिव्यनाम्नी परिश्रुता ॥ पुलोमश्चापि
पौलोमि दुहिता वर वर्णिनी ॥ भृगोस्त्वजनयद्विव्या
काव्यवेदविंदा वरं ॥ देवा सुराणामाचार्य शुक्रं कविसुंत
ग्रहं ॥ पितृणा मानसी कन्या सोमपाना यशस्विनी ॥
शुक्रस्य भार्यागीराम विजये चतुरः सुतान् ॥ ब्राह्मणे
मानसी कन्या सोमपाना यशस्विनीः ॥ तस्या मेव तु

चत्वार पुत्राः शुक्रस्य जज्ञिर ॥ त्वष्टावरूपी द्वावेतौ
शण्डामर्कोतु ताबुभो ॥ ते तदादित्य सकाया ब्रह्मकल्पा
प्रभावतः ॥

अर्थ: हिरण्यकश्यप की बेटी दिव्या और पुलोमी की बेटी
पौलीमी उत्तम कुलीन, यह दोनों मृग ऋषि को विवाही
गई। दिव्या नाम वाली स्त्री के गर्भ से शुक्राचार्य पैदा हुए।
सोम्य पितरों की मानसी कन्या अर्गी नाम वाली
शुक्राचार्य को विवाही गई। शुक्राचार्य जी के सूर्य के
समान ब्रह्म तेज वाले त्वष्टा, वस्त्र, शंड और अर्मक यह
पुत्र पैदा हुए, इन चारों में त्वष्टा ब्रह्म तेज से विशेष सुक्त
था । अर्थात् त्वष्टा में ब्रह्म तेज अधिक था। पाठक गण
इससे स्पष्ट है कि त्वष्टा भृगु कुल में पैदा हुआ और
ब्राह्मण था, ब्राह्म तेज की विशेषता ब्राह्मणत्व को साफ
बता रही है। अब इसी कुल में त्वष्टा से विश्वकर्मा का
जन्म सुनों।

त्रिशिरा विश्वरूपस्तु त्वष्टाः पुत्राय भवताम् ॥

विस्वरूपानुजश्चापि विश्वकर्मा प्रजापतिः ॥

अर्थ: त्वष्टा प्रजापति के त्रिशिरा जिसका नाम विश्वरूप था बड़ा पराक्रमी और उसका भाई विस्वकर्मा प्रपति यह दो पुत्र इसी विश्वकर्मा प्रजापति के विषय में स्कन्द पुराण रे प्रभास खंड में यह लिखा है।

विश्वकर्म महदभूतं विश्वकर्माणाम् मदंगेषु च सम्भूताः ॥

पुत्रा पंच जटाधराः हस्त कौशल सम्पूर्णाः पंच ब्रह्मरताः सदा ॥

अर्थ: शिल्पियों में विश्वकर्मा बड़ा महान हुआ, जिसके पांच जटाधारी पुत्र हुए। इन्हीं विश्वकर्मा के पांच पुत्र मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी और दैवज्ञ का वायु पुराण अध्याय, 4 में उल्लेख किया हुआ है इन्हीं पांच पुत्रों की सतांन जो

हुई वह सब भृगु कुलोत्पन्न विश्व-ब्राह्मण या पांचाल ब्राह्मण कहलाई।

पाठकगण ध्यान दें कि उपरोक्त विदित वंश बिलकुल साफ-सुथरा और खरा है। इसमें कोई अण्ड-बण्ड ऐसी उत्पत्ति नहीं है। जैसा कि इस पुस्तक की भूमिका में हम अकसाली ब्राह्मणों की उत्पत्ति जाति भास्कर और ब्राह्मणोंत्पत्ति मार्तण्ड के अधार पर दिखा चुके हैं। पाठको की जानकारी के लिए हम यहां भृगु कुल में उत्पन्न हुए सब ही ऋषियों का उत्पत्ति क्रमानुसार दिखाते हैं।

इस कुल में भृगु, च्यवन, दिवोदास और गृत्समद और शौनक यह वेद मंत्र के द्रष्टा हुए हैं।

भृगु: ब्रह्मदेव का मानस पुत्र क् शाप से मर गये तब ब्रह्मदेव ने उनको फिर उत्पन्न किया और वह वरूण के

यज्ञ में अग्नि से उत्पन्न हुए और वरूण ने इनको अपना पुत्र ग्रहण किया। इसी कारण यह वारूणी भृगु के नाम से प्रसिद्ध हुए। विशेष जिसे देखना हो वायुपुत्र अ. 4 मत्स्य पुराण अ.252 महाभारत अनुशासन पर्व अ.85 निरुक्त दैवज्ञ कांड भाग पृ. 193 और भारत वर्षीय प्राचीन ऐतिहासिक कोष में देख सकते हैं।

भार्गवः भृगु ऋषि के पुत्र सुक्राचार्य का ही नाम भार्गव है। यह देवों और दत्तों के दोनों के ही पुरोहित अर्थात् आचार्य थे। इन्होंने शिल्प शास्त्र का ओशनस नामक ग्रंथ भी लिखा है। वायु पुराण और बृहत्संहिता अ.50 में विशेष रूप से देख सकते हैं।

त्वष्टाः शुक्राचार्य के चार पुत्रों में से थे। इनमें अधिक ब्रह्मतेज था। विश्वरूप और विश्वकर्मा इनके दो पुत्र थे।

शौनकः यह शुनक ऋषि के पुत्र और ऋग्वेद के द्रष्टा ऋषि थे। पांचालो की शौन कायनी शाखा इन्हीं से चली है।

उपरोक्त सब ही ऋषि शिल्प कार्य करते थे। गोत्र प्रवर दीपिका में इस भृगु कुल के गोत्र प्रवर इस प्रकार दिये हैं।

भृगु ऋषि - भार्गव, च्यवन,, देवो दासेति।

वाध्न्यस्वा - भार्गव, वाध्न्यश्वा, देवो दासेति।

भार्गव - भार्गव, त्वष्टा, विश्वरूपेति।

वाधूल - भार्गव, वैतहव्य, सावेतसेति।

शुनक - शौनक, भार्गव, शौन हौत्र गात्समदप्ति।

किसी किसी ग्रन्थकार जैसे बोधयन नामक सूत्रकार ने वरिष्ठ शुनक अत्रि, भृगु, कण्व, वाध्न्यश्वा, वाधूल, यह गोत्र भी नाराशंस पांचालों के आर्षेय गोत्र लिखे हैं।

केवल आंगिरस कुल के प्रसिद्ध ऋषि

उपरोक्त अंगिरा वशांवली दी गई है, यह प्रमाण-संग्रह से उद्धृत है। अंगिरा ऋषि ब्रह्मा, के मुख से उत्पन्न हुये। इनका वर्णन वेद, ब्राह्मण ग्रंथ, श्रुति, स्मृति, रामायण, महाभारत और सभी पुराणों में उल्लेख है। अंगिरा कुल परम श्रेष्ठ कुल है।

अंगिरा

अंगिरा ऋषि के विषय में मत्स्य पुराण, भागवत, वायु पुराण महाभारत और भारतवर्षीय प्राचीन ऐतिहासिक

कोष में वर्णन किया गया है। मत्स्य पुराण में अंगिरा ऋषि की उत्पत्ति अग्नि से कही गई है। भागवत का कथन है कि अंगिरा जी ब्रह्मा के मुख से यज्ञ हेतु उत्पन्न हुए। महाभारत अनु पर्व अध्याय 83 में कहा गया है कि अग्नि से महा यशस्वी अंगिरा भृगु आदि प्रजापति ब्रह्मदेव है। ऋग्वेद 10-14-6 में कहा है कि:

अमगिरासों नः पितरो नवग्वा अर्थर्वाणो भृगवः
सोम्यासः। तेषां वयं सुभतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसः
स्यामः॥

अर्थ: जिसके कुल में भरद्वाज, गौतम और अनेक महापुरुष उत्पन्न हुए ऐसे जो अग्नि के पुत्र महर्षि अंगिरा बड़े भारी विद्वान हुए हैं उनके वशं को सुनों। अंगिरस देव धनुष और बाण धारी थे, उनको ऋषि मारीच की बेटी सुरूपा व कर्दम ऋषि की बेटी स्वराट् और मनु ऋषि

कन्या पथ्या यह तीनों विवाही गई। सुरूमा के गर्भ से बृहस्पति, स्वराट् से गौतम, प्रबंध, वामदेव उत्तथ्य और उशिर यह पाँछ पुत्र जन्में, पथ्या के गर्भ से विष्णु संवर्त, विचित, अयास्य असिज, दीर्घतमा, सुधन्वा यह सात पुत्र उत्पन्न हुए। उत्तथ्य ऋषि से शरद्वान, वामदेव से बृहदुकथ्य उत्पन्न हुए। महर्षि सुधन्वा के ऋषि विभ्मा और बाज यह तीन पुत्र हुए। यह ऋषि पुत्र हुए। महर्षि सुधन्वा के ऋषि विभ्मा और बाज यह तीन पुत्र हुए। यह ऋषि पुत्र रथकार में बड़े कुशल देवता थे, तो भी इनकी गणना ऋषियों में की गई है। बृहस्पति का पुत्र महा यशस्वी भरद्वाज हुआ, यह सब अंगिरा भृगु आदि द्व शिल्प के निर्माण वाले रथकार नाम से प्रसिद्ध हुए। इसमें स्पष्ट सिद्ध हो गया की प्राचीन काल में शिल्पी ब्राह्मणों रथकार भी कहा करते थे और रथकार शब्द ब्राह्मण जाति बोधक है, इस विषय में हम पूर्व पर रथकार शब्द

को व्याकरण की कसौटि पर कसकर ब्राह्मण बोधक सिद्ध कर चुके है।

महाभारत अमुसाशन पर्व अध्याय पर्व अध्याय 83 में अंगिरा ऋषि के आठ पुत्रों की आग्नेय सजां होने के विषय में यह उल्लेख है:

अष्टौ चांगिरसः पुत्राः आग्नेयास्तेऽप्युवाहताः।
बृहस्पतिरूतथ्यशय पयस्यः शांतिरेवच। धोरो विरूपः
सर्वतः सुधन्वा चाष्टमः स्मृतः।

श्री विश्वकर्मा चालीसा

दोहा - श्री विश्वकर्म प्रभु
वन्दऊँ, चरणकमल धरिध्यान ।
श्री, शुभ, बल अरु शिल्पगुण,
दीजै दया निधान ॥

जय श्री विश्वकर्म भगवाना ।
जय विश्वेश्वर कृपा निधाना ॥
शिल्पाचार्य परम उपकारी ।
भुवना-पुत्र नाम छविकारी ॥
अष्टमबसु प्रभास-सुत नागर ।
शिल्पज्ञान जग कियउ उजागर ॥
अद्रभुत सकल सृष्टि के कर्त्ता ।
सत्य ज्ञान श्रुति जग हित धर्त्ता ॥
अतुल तेज तुम्हतो जग माहीं ।
कोइ विश्व मैंह जानत नाही ॥
विश्व सृष्टि-कर्त्ता विश्वेशा ।
अद्रभुत वरण विराज सुवेशा ॥
एकानन पंचानन राजे । द्विभुज
चतुर्भुज दशभुज साजे ॥
चक्रसुदर्शन धारण कीन्हे । वारि

कमण्डल वर कर लीन्हे ॥

शिल्पशास्त्र अरु शंख अनूपा ।
सोहत सूत्र माप अनुरूपा ॥

धमुष वाण अरू त्रिशूल सोहे ।
नौवें हाथ कमल मन मोहे ॥

दसवाँ हस्त बरद जग हेतू ।
अति भव सिंधु माँहि वर सेतू ॥

सूरज तेज हरण तुम कियऊ ।
अस्त्र शस्त्र जिससे निरमयऊ ॥

चक्र शक्ति अरू त्रिशूल एका ।
दण्ड पालकी शस्त्र अनेका ॥

विष्णुहिं चक्र शूल शंकरहीं ।
अजहिं शक्ति दण्ड यमराजहीं ॥

इंद्रहिं वज्र व वरूणहिं पाशा ।
तुम सबकी पूरण की आशा ॥

भाँति - भाँति के अस्त्र रचाये ।

सतपथ को प्रभु सदा बचाये ॥

अमृत घट के तुम निर्माता ।

साधु संत भक्तन सुर त्राता ॥

लौह काष्ठ ताम्र पाषाणा । स्वर्ण
शिल्प के परम सजाना ॥

विद्युत अग्नि पवन भू वारी ।
इनसे अद्भुत काज सवारी ॥

खान पान हित भाजन नाना ।
भवन विभिषत विविध विधाना ॥

विविध वसत हित यत्र अपारा ।
विरचेहु तुम समस्त संसारा ॥

द्रव्य सुगंधित सुमन अनेका ।
विविध महा औषधि सविवेका ॥

शंभु विरंचि विष्णु सुरपाला ।
वरुण कुबेर अग्नि यमकाला ॥

तुम्हरे ढिग सब मिलकर गयऊ ।

करि प्रमाण पुनि अस्तुति ठयऊ ॥

भे आतुर प्रभु लखि सुर-शोका
। कियउ काज सब भये अशोका ॥

अद् भुत रचे यान मनहारी ।
जल-थल-गगन माँहि-समचारी ॥

शिव अरु विश्वकर्म प्रभु माँही ।
विज्ञान कह अंतर नाही ॥

बरनै कौन स्वरूप तुम्हारा ।
सकल सृष्टि है तव विस्तारा ॥

रचेत विश्व हित त्रिविध शरीरा ।
तुम बिन हरै कौन भव हारी ॥

मंगल-मूल भगत भय हारी ।
शोक रहित त्रैलोक विहारी ॥

चारो युग परपात तुम्हारा । अहै
प्रसिद्ध विश्व उजियारा ॥

ऋद्धि सिद्धि के तुम वर दाता ।

वर विज्ञान वेद के ज्ञाता ॥

मनु मय त्वष्टा शिल्पी तक्षा ।
सबकी नित करते हैं रक्षा ॥

पंच पुत्र नित जग हित धर्मा ।
हवै निष्काम करै निज कर्मा ॥

प्रभु तुम सम कृपाल नहिं कोई
। विपदा हरै जगत मँह जोड़ ॥

जै जै जै भौवन विश्वकर्मा ।
करहु कृपा गुरुदेव सुधर्मा ॥

इक सौ आठ जाप कर जोई ।
छीजै विपति महा सुख होई ॥

पढाहि जो विश्वकर्म-चालीसा ।
होय सिद्ध साक्षी गौरीशा ॥

विश्व विश्वकर्मा प्रभु मेरे । हो
प्रसन्न हम बालक तेरे ॥

मैं हूँ सदा उमापति चेरा । सदा

करो प्रभु मन मैंह डेरा ॥

दोहा - करहु कृपा शंकर
सरिस, विश्वकर्मा शिवरूप ।

श्री शुभदा रचना सहित, हृदय
बसहु सुरभुप ॥

श्री विश्वकर्मा भगवान की प्रातः कालीन स्तुति

श्री विश्वकर्मा विश्व के भगवान
सर्वाधारणम् । शरणागतम् शरणागतम्
शरणागतम् सुखाकारणम् ॥

कर शंख चक्र गदा मद्म त्रिशुल
दुष्ट संहारणम् । धनुबाण धारे निरखि छवि
सुर नाग मुनि जन वारणम् ॥

डमरु कमण्डलु पुस्तकम् गज

सुन्दरम् प्रभु धारणम् । संसार हित कौशल
कला मुख वेद निज उच्चारणम् ॥

त्रैताप मेटन हार हे ! कर्तार
कष्ट निवारणम् । नमस्तुते जगदीश जगदाधार
ईश खरारणम् ॥

सर्वज्ञ व्यापक सत्तचित आनंद
सिरजनहारणम् । सब करहिं स्तुति शेष
शारदा पाहिनाथ पुकारणम् ॥

श्री विश्वपति भगवत के जो
चरण चित लव लांड है । करि विनय बहु
विधि प्रेम सो सौभाग्य सो नर पाइ है ॥

संसार की सुख सम्पदा सब
भांति सो नर पाइ है । गहु शरण जाहिल
करि कृपा भगवान तोहि अपनाई है ॥

प्रभुदित हृदय से जो सदा
गुणगान प्रभु की गाइ है । संसार सागर से

अवति सो नर सुपथ को पाइ है ॥

हे विश्वकर्मा विश्व के भगवान
सर्वा धारणम् । शरणागतम् । शरणागतम् ।
शरणागतम् । शरणागतम् ॥

श्री विश्वकर्मा भगवान की मुरति
अजब विशाल । भरि निज नैन विलोकिये
तजि नाना जंजाल ॥

आरती गाऊं जगदीश हरी को ।
विश्वकर्मा स्वामी परम श्री की ।

तन मन धन सब अर्पण तेरे ।
करो वास हिये मैं प्रभु मेरे ।

शिव विरंची तुमरे गुण गावें ।

घनश्याम राम सिया मां ध्यावें । 1 ।

कलियुग में कर साधन कीन्हां ।
चतुरानन वेद पढ्यो मुनि चारा ।

शिल्प कला शुभ मार्ग दीन्हा ।
साम यजु ऋग शिल्प भडारा । 2 ।

विश्वकर्मा नाम सदा अविनाशी ।
अगम अगोचर घट घट वासी ।

कल्पतरु पद सब सुख धामा ।
सत्य सनातन मुद मंगल नामा । 3 ।

करें अर्चन सुमरण पूजा किसकी
। नहीं तुम बिन दूजा करे आसा जिसकी ।

विषय विकार मिटाओ मन के ।
दुख व्याधा रोग कटें तब तन के । 4 ।

माता पिता तुम शरणा गत
स्वामी । तुम पूरण प्रभु नित्य अन्तर्यामी ।
हम पावन पाठ करेंहिं चितलाई

। करो संकट नाश सदा सुख दाई । 5 ।

परम विज्ञानी सत्य लोक निवासी

। देव तनु धर आयो , ख राशी ।

तुम बिन जग में कौन गोसाँई ।

विश्वप्रताप की अब जो करे सहाई । 6 ।

श्री विश्वकर्मा प्रार्थना

हे विश्वकर्मा ! परम प्रभु ! ,
इतनी विनय सुन लीजिये । दुःख दुर्गुणो
को दूर कर, सुख सद् गुणों को दीजिये ॥

ऐसी दया हो आप की, सब
जन सुखी सम्पन्न हों । कल्याण कारी गुण
सभी में, नित नये उत्पन्न हों ॥

प्रभु विघ्न आये पास ना, ऐसी

कृपा हो आपकी । निशिदिन सदा निर्मय
रहें, सतांप हो नहि ताप की ॥

कल्याण होये विश्व का, अस
ज्ञान हमको दीजिये । निशि दिन रहें
कर्त्तव्य रल, अस शक्ति हमनें कीजियें ॥

तुम भक्त - वत्सल ईश हो,
‘ भौवन ’ तुम्हारा नाम है । सत कोटि
कोट् न अहर्निशि, सुचि मन सहित प्रणाम है
॥

हो निर्विकार तथा पितुम हो
भक्त वत्सल सर्वथा, हो तुम निरिहत तथा
पी उदभुत सृष्टी रचते हो सदा ।

आकार हीन तथा पितुम साकार
सन्तत सिद्ध हो, सर्वेश होकर भी सदातुम
प्रेम वस प्रसिद्ध हो ।

करता तुही भरता तुही हरता
तुही हो शृष्टि के, हे ईश बहुत उपकार
तुम ने सर्लदा हम पर किये ।

उपकार प्रति उपकार मे क्या दें
तुम्हे इसके लिए, है क्या हमारा शृष्टि में
जो दे तुम्हे इसके लिए ।

जय दीन बन्धु सोक सिधी दैव
दैव दया निधे, चारो पदार्थ दया निधे फल
है तुम्हारे दृष्टि के ।

श्री विश्वकर्मा आरती

आरती पंच मुखी विश्वकर्मा की
आरती विश्वकर्मा अवतार की
आरती विश्वकर्मा हरि की
आरती विराट विश्वकर्मा भगवान की

आरती पंच मुखी विश्वकर्मा की

ओ३म् जय पंचानन देवा
, प्रभु जय पंचानन देवा । ब्रह्मा विष्णु
शंकर आदि करते नित्य सेवा ।१।

भव मय त्राता जगत
विधाता, मुक्ति फल दाता । स्वर्ण सिंहासन
मुकुट शीश चहूँ, सबके मन भाता ।२।

प्रभात पिता भवना

(माता) विश्वकर्मा स्वामी । विज्ञान शिल्प
पति जग मांहि, आयो अन्तर्यामी । 3।

त्रिशुल धनु शंकर को
दीन्हा, विश्वकर्मा भवकर्ता । विष्णु महल
रचायो तुमने, कृपा करो भर्ता । 4।

भान शशि नक्षत्र सारे,
तुम से ज्योति पावें । दुर्गा इन्द्र देव मुनि
जन, मन देखत हर्षावें । 5।

श्रेष्ठ कमण्डल कर
चक्रपाणी तुम से त्रिशुल धारी । नाम
तुम्हारा सयाराम और भजते कुँज बिहरी ।

6।

नारद आदि शेष शारदा,
नुत्य गावत गुण तेरे । अमृत घट की रक्षा
कीन्ही, जब देवों ने टेरे । 7।

सिन्धु सेत बनाय राम की

पल में करी सहाई । सप्त ऋषि दुख
मोचन कीन्हीं, तब शान्ति पाई ।८। (तब)

सुर नर किन्नर देव मुनि,
गाथा नित्य गाते । परम पवित्र नाम सुमर
नर, सुख सम्पति पाते ।९।

पीत वसन हंस वाहन
स्वानी, सबके मन भावे । सो प्राणी धन
भाग पिता, चरण शरण जो आवे ।१०।

पंचानन विश्वकर्मा की जो
कोई आरती गावे । निश्चप्रताप, दुख छीजें
सारा सुख सम्पत आवे ।११।

आरती विश्वकर्मा अवतार की

ओ३म् जय पंचानन स्वामी
प्रभु पंचानन स्वामी । अजर अमर
अविनाशी, नमो अन्तर्यामी ।

चतुरानन संग सात ऋषि,
शरण आपकी आये । अभय दान दे
ऋषियन को, सार कष्ट मिटाये ।१।

निगम गम पथ दाता हमें
शरण पडे तेरी । विषय विकार मिटाओ
सारे, मत लाओ देरी ।२।

कुण्डल कर्ण गले मे माला
इस वाहन सोहे । जति सति सन्यासी जग
के, देख ही मोहे ।३।

श्रेष्ठ कमण्डल मुकमट
शीश पर तुम त्रिशूल धारी । भाल विशा
सुलोचन देखत सुख पावँ नरनारी ।४।

देख देख कर रूप
मुनिजन, मन ही मन रीझै । अग्नि वायु
आदित्य अंगिरा, आनन्द रस पीजै । 5।

ऋषि अंगिरा कियो धारे
तपस्या, शान्ति नही पाई । चरण कमल
का दियो आसय, तब सब बन आई । 6।

भक्त की जय कार तुम्हारी
विज्ञान शिल्प दाता । जिस पर हो तेरी
दया दृष्टि भव सागर तर जाता । 7।

ऋषि सिर्फ ज्ञान विधायक
जो शरण तुम्हारी आये । विश्वप्रताप दुख
रोग मिटे, सुख सम्पत पावे । 8।

आरती विश्वकर्मा हरि की

ओ३म् जय विश्वकर्मा हरे
जय विश्वकर्मा हरे । दीना नाथ शरण गत
वत्सलभव उद्धार करे ।1।

भक्त जनों के समय समय
पर दुख संकट हर्ता । विश्वरूप जगत के
स्वामी तुम आदि कर्ता ।2।

ब्रह्म वशं मे अवतार धरो,
निज इच्छा कर स्वामी । प्रभात पिता
महतारी भूवना योग सुता नामी ।3।

शिवो मनुमय त्वष्टा शिल्पी
दैवज सुख दाता । शिल्प कला मे पांच
तनय, भये ब्रह्म ज्ञाता ।4।

नारद इन्द्रशेष शारदा तव
चरणन के तेरे । अग्नि वायु आदित्य
अंगिरा, गावें गुण तेरे ।5।

देव मुनि जन ऋषि
महात्मा चरण शरण आये । राम सीया और
उमा भवानी कर दर्शन हर्षाये । 6।

ब्रह्मा विष्णु शंकर स्वामी,
करते नित्य सेवा । जगत प्राणी दर्श करन
हित, आस करें देवा । 7।

हेली नाम विप्र ने मन से
तुम्हारा गुण गाया । मिला षिल्प वरदान
विप्र को, भक्ति फल पाया । 8।

अमृत घट की रक्षा
कीन्ही, सुर भय हीन भये । महा यज्ञ हेतु
इन्द्र के घर, बन के गुरु गये । 9।

पीत वसन कर चक्र सोहे.
महा वज्र धारी । वेद ज्ञान की बहे सरिता,
सब विध सुखकारी । 10।

हम अज्ञान भक्त तेरे तुम

सच्चे हितकारी । करो कामना सब की
पूर्ण, दर पर खडे भिकारी ।११।

विश्वकर्मा सत्गुरु हमारे,
कष्ट हरो तन का । विश्वप्रताप शरण सुख
राशि दुख विनेश मन का ।१२।

आरती विराट विश्वकर्मा भगवान की

ओ३म् जय विश्वकर्मा प्रभु
जय विश्वकर्मा । शरण तुम्हारी आये हैं,
रक्षक श्रुति धर्मा ।

उमा भवानी शंकर भोले,
शरण तुम्हारी आये । कुंज बिहारी कृष्ण
योगी, दर्शन करने धाये ।१।

सृष्टि धर्ता पालन कर्ता,
ज्ञान विकास किया । धनुष बना छिन माहिं
तुमने, शिवाजी हाथ दिया । 2।

आठ व्दीप नौ खण्ड
स्वामी, चौदह भुवन बनायें । पंचानन
करतार जगत के, देख सन्त हर्षाये । 3।

शेष शारदा नारद आदि
देवन की करी सहाई । दुर्गा इन्द्र सीया राम
ने निज मुख गाथा गाई । 4।

ब्रह्म विष्णु विश्वकर्मा तूं
शक्ति रूपा । जगहितकारी सकंट हारी ,
तुम जग के भूपा । 5।

ज्ञान विज्ञान निधि दाता
त्वष्टा भुवन पति । अवतार धार के स्वामी
तुमने जग में कियो गति । 6।

मनु मय त्वष्टा पाँच तनय ,

ज्ञान शिल्प दाता । शिल्प विधा का आदि
युग में, तुम सम को ज्ञाता । 7।

मन भावन पावन रुप
स्वामी ऋषियों ने जाना । पीत वसन तन
सोहे स्वामी, मुक्ति पद बाना । 8।

विश्वकर्मा परम गुरु की जो
कोई आरती गावै । विश्वप्रताप सन्ताप
मिटै, घर सम्पत आवै । 9।

श्री विश्वकर्मा भगवान के 108 नाम

ॐ विश्वकर्मणे नमः

ॐ विश्वात्मने नमः

ॐ विश्वस्माय नमः

ॐ विश्वधाराय नमः

ॐ विशवधर्माय नमः

ॐ विरजे नमः

ॐ विश्वेक्ष्वराय नमः

ॐ विष्णवे नमः

ॐ विश्वधराय नमः

ॐ विश्वकराय नमः

ॐ वास्तोष्पतये नमः

ॐ विश्वभंराय नमः

ॐ वर्मिणे नमः

ॐ वरदाय नमः

ॐ विश्वेशाधिपतये नमः

ॐ वितलाय नमः

ॐ विशभुंजाय नमः

ॐ विश्वव्यापिने नमः

ॐ देवाय नमः

ॐ धार्मिणे नमः

ॐ धीराय नमः

ॐ धराय नमः

ॐ परात्मने नमः

ॐ पुरुषाय नमः

ॐ धर्मात्मने नमः

ॐ श्वेतांगाय नमः

ॐ श्वेतवस्त्राय नमः

ॐ हंसवाहनाय नमः

ॐ त्रिगुणात्मने नमः

ॐ सत्यात्मने नमः

ॐ गुणवल्लभाय नमः

ॐ भूकल्पाय नमः

ॐ भूलेंकाय नमः

ॐ भुवलेकाय नमः

ॐ चतुर्भुजय नमः

ॐ विश्वरूपाय नमः

ॐ विश्वव्यापक नमः

ॐ अनन्ताय नमः

ॐ अन्ताय नमः

ॐ आह्वाने नमः

ॐ अतलाय नमः

ॐ आघ्रात्मने नमः

ॐ अनन्तमुखाय नमः

ॐ अनन्तभूजाय नमः

ॐ अनन्तयक्षुय नमः

ॐ अनन्तकल्पाय नमः

ॐ अनन्तशक्तिभूते नमः

ॐ अतिसूक्ष्माय नमः

ॐ त्रिनेत्राय नमः

ॐ कंबीघराय नमः

ॐ ज्ञानमुद्राय नमः

ॐ सूत्रात्मने नमः

ॐ सूत्रधराय नमः

ॐ महलोकाय नमः

ॐ जनलोकाय नमः

ॐ तषोलोकाय नमः

ॐ सत्यकोकाय नमः

ॐ सुतलाय नमः

ॐ सलातलाय नमः

ॐ महातलाय नमः

ॐ रसातलाय नमः

ॐ पातालाय नमः

ॐ मनुषपिणे नमः

ॐ त्वष्टे नमः

ॐ देवज्ञाय नमः

ॐ पूर्णप्रभाय नमः

ॐ हृदयवासिने नमः

ॐ दुष्टदमनाथ नमः

ॐ देवधराय नमः

ॐ स्थिर कराय नमः

ॐ वासपात्रे नमः

ॐ पूर्णानंदाय नमः

ॐ सानन्दाय नमः

ॐ सर्वेश्वराय नमः

ॐ परमेश्वराय नमः

ॐ तेजात्मने नमः

ॐ परमात्मने नमः

ॐ कृतिपतये नमः

ॐ बृहद् स्मणाय नमः

ॐ ब्रह्मांडाय नमः

ॐ भुवनपतये नमः

ॐ त्रिभुवनाथ नमः

ॐ सतातनाथ नमः

ॐ सर्वादये नमः

ॐ कर्षापाय नमः

ॐ हर्षाय नमः

ॐ सुखकत्रे नमः

ॐ दुखहर्त्रे नमः

ॐ निर्विकल्पाय नमः

ॐ निर्विधाय नमः

ॐ निस्माय नमः

ॐ निराधाराय नमः

ॐ निकाकाराय नमः

ॐ महदुर्लभाय नमः

ॐ निमोहाय नमः

ॐ शांतिमूर्तय नमः

ॐ शांतिदात्रे नमः

ॐ मोक्षदात्रे नमः

ॐ स्थवीराय नमः

ॐ सूक्ष्माय नमः

ॐ निर्मोहय नमः

ॐ धराधराय नमः

ॐ स्थूतिस्माय नमः

ॐ विश्वरक्षकाय नमः

ॐ दुर्लभाय नमः

ॐ स्वर्गलोकाय नमः

ॐ पंचवक्त्राय नमः

ॐ विश्वलल्लभाय नमः

["https://hi.wikipedia.org/w/index.php?title=श्री_विश्वकर्मा_पुराण&oldid=4332739"](https://hi.wikipedia.org/w/index.php?title=श्री_विश्वकर्मा_पुराण&oldid=4332739) से लिया गया

Last edited 6 months ago by 2409:4050:E88:FF92:0:0:E309:EB13

सामग्री CC BY-SA 3.0 के अधीन है जब तक अलग से उल्लेख ना किया गया हो।